विकलांग बच्चों के लिए अधिगम के अवसर पैदा करना

अनुपमा राय

यदि आप किसी विकलांग बच्चे के माता-पिता हैं तो उसके लिए एक निरापद, सुरक्षित और किफ़ायती अधिगम के अवसर खोजना एक चुनौतीपूर्ण काम है। मैं इस लेख में बताऊँगी कि मैंने अपने बेटे के लिए कौन-कौन से क़दम उठाए।

विकलांग लोगों के लिए रोज़गार को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय केन्द्र (एनसीपीईडीपी) के एक सर्वेक्षण से पता चला है कि भारत में विकलांगता वाले (पीडब्ल्यूडीएस) केवल 1.2 प्रतिशत लोगों ने ही किसी भी तरह की कोई शिक्षा प्राप्त की है। अखिल भारतीय स्कूल स्तर पर किए गए सर्वेक्षण में एनसीपीईडीपी ने पाया कि सर्वेक्षण किए गए 89 स्कूलों में से 34 स्कूलों में एक भी विकलांग विद्यार्थी नहीं था और दुर्भाग्य से उनमें से 18 स्कूलों में विकलांग बच्चों को प्रवेश देने के खिलाफ़ नीति थी (सखुजा, 2004)।

अधिगम में कठिनाइयों का कारण बनने वाली विकलांगता में दृष्टि, बोलने व भाषा सम्बन्धी और श्रवण दोष, मांसपेशियों और हड्डियों या तन्त्रिका तन्त्र या दोनों से सम्बन्धित कष्ट, अधिगम की अक्षमता और स्वलीनता स्पेक्ट्रम विकार, मानसिक रोग, चिरकालिक तन्त्रिकाजन्य स्थितियों के कारण होने वाली विकलांगता, एकाधिक विकलांगता और ऐसी ही वह श्रेणी शामिल है जिसे केन्द्र सरकार द्वारा अधिसूचित किया जा सकता है।

भारतीय शिक्षा-प्रणाली में अध्यापन-कला दृश्य-सामग्री के लिए पाठ्यपुस्तकों और ब्लैकबोर्ड पर बहुत अधिक निर्भर करती है। इससे श्रवण या/और दृश्य प्रसंस्करण (visual processing) समस्याओं वाले बच्चों को कठिनाई होती है। उनके लिए तो ऐसी गतिविधियाँ आवश्यक हैं जो नाटक, संगीत, चित्र और दृश्य-श्रव्य सामग्री के उपयोग पर आधारित हों। उदाहरण के लिए, वर्णमाला सिखाने के लिए रेगमाल या सैंडपेपर कट-आउट, ट्रेसिंग लेटर्स, शारीरिक गति (जैसे नृत्य में होती है), ध्वनियों आदि का प्रयोग करना अधिक उपयुक्त है। इसी प्रकार भूगोल की घूर्णन और परिक्रमण जैसी अवधारणाओं को प्रदर्शित करने वाली गतिविधियाँ या तो क्रॉफ्ट गतिविधियों या फिर रोल-प्ले के माध्यम से बेहतर समझ सुनिश्चित करेंगी। ये बहु-संवेदी शिक्षण विधियाँ बच्चे को एक से अधिक इन्द्रियों के माध्यम से सीखने में मदद करती हैं।

तथापि विकलांगता वाला बच्चा दृश्य या श्रवण या इन दोनों तरीक़ों में कठिनाइयों का अनुभव कर सकता है। बच्चे का दृश्य प्रसंस्करण प्रभावित हो सकता है और उसे लक्ष्यानुसरण (ट्रैकिंग) और दिशात्मकता की कठिनाइयाँ हो सकती हैं। इसका समाधान यह है कि शिक्षण में एक साथ दो या अधिक इन्द्रियों के उपयोग को शामिल करना चाहिए, विशेष रूप से स्पर्श (छूना) और गतिज (गति) का उपयोग। उदाहरण के लिए वर्णमाला की बनावट को समझाने के लिए इन दोनों का उपयोग करके एक ट्रे पर शेविंग फोम की सहायता से बच्चे को वर्णमाला के अक्षर लिखने के लिए प्रोत्साहित करना। इससे बच्चे के मस्तिष्क को अपने स्पर्शशील और गतिज अनुस्मरणों (मेमोरी) के साथ-साथ दृश्य और श्रवण अनुस्मरणों को बनाए रखने में सहारा मिलेगा।

विकलांग बच्चों के शिक्षण के लिए सब कुछ मूर्त होना चाहिए : एक अनुभवी विशेष शिक्षक के शब्दों में 'पहले वस्तु, फिर अमूर्त'। कक्षा और शिक्षण के अन्य वातावरण ऐसे होने चाहिए जो बच्चों को खेल-खेल में सीखने के पर्याप्त अवसर दें और पढ़ने-लिखने के शुरुआती कौशलों पर कम ज़ोर दें। एक दिन मैं अपने बेटे को जिम की गेंद और योग की चटाई की मदद से उसके स्कूल में विशेष शिक्षक के कमरे में एक संवेदी विराम दे रही थी। उसी समय एक अन्य बच्चे का विशेष शिक्षक के साथ सत्र चल रहा था। वह जिम की गेंद की सभी गतियों की ओर आकर्षित हो रहा था - उसे अपने शरीर के माध्यम से सीखना अच्छा लग रहा था। जिन बच्चों को सीखने में कठिनाई होती है, उन्हें अपने हाथों से सब कुछ करके अपने शरीर के माध्यम से सीखने की आवश्यकता होती है। प्रत्येक क्रिया उन्हें नए शब्द सिखाती है, उन्हें अन्य बच्चों की तुलना में अपने शरीर को अधिक गतिमान करने की आवश्यकता होती है ताकि उनकी सजगता में सुधार हो और वे कक्षा में अधिक देर तक व अधिक चौकस होकर ध्यान केन्द्रित कर सकें, नहीं तो पढ़ाई जाने वाली विषयवस्तु से उनका ध्यान बड़ी आसानी से बँट जाता है। उन्हें कई बार इस बात की ज़रूरत भी पड़ सकती है कि शिक्षक थोड़ा रुकें और अवधारणाओं को कई बार दोहराएँ ताकि वे मूल विचार को समझ सकें।

खेल चिकित्सक ऐसे बच्चों के साथ बहुत अद्भुत काम कर रहे हैं जिन्हें किसी भी प्रकार की विकलांगता है। वे उन्हें समूहों का हिस्सा बनने में मदद करने के लिए मज़ेदार तरीक़े तैयार करते हैं। साथ ही व्यावसायिक चिकित्सक बच्चे की ज़रूरतों के लिए अनुकूलित व्यायाम और गतिविधियों को डिज़ाइन करते हैं।

हालाँकि सीबीएसई ने हर स्कूल में एक विशेष शिक्षक का होना अनिवार्य कर दिया है, लेकिन दुख की बात है कि अधिकतर स्कूलों में विशेष शिक्षक या तो अच्छी तरह से प्रशिक्षित नहीं होते हैं या किसी अनुपस्थित शिक्षक के एवज़ में काम करते हैं या फिर परीक्षाओं अथवा खेल गतिविधियों के दौरान उनमें हाथ बँटाते हैं। आमतौर पर विभिन्न कक्षाओं और कठिनाइयों के विभिन्न स्तरों वाले पन्द्रह से बीस विद्यार्थियों के लिए केवल एक विशेष शिक्षक होता है। मेरे बेटे के स्कूल में जो विशेष शिक्षक थे, वे उसकी अकादमिक सहायता के लिए सप्ताह में केवल एक बार अपना सत्र चला पाते थे। माता-पिता के साथ अधिक प्रत्यक्ष सम्बन्ध न होने के कारण और इस तथ्य के कारण भी कि उनका पारिश्रमिक और रोज़ काम के अधिक घण्टे उनकी योग्यता से मेल नहीं खाते, क्योंकि इसमें मेहनत बहुत है, विशेष शिक्षक जल्दी-जल्दी नौकरियाँ बदलते रहते हैं। यह एक गम्भीर मुद्दा है क्योंकि इसके परिणामस्वरूप उनके विद्यार्थी असुरक्षित महसूस करते हैं। विकलांग विद्यार्थियों के लिए सीखने का माहौल पूर्वानुमानित तथा स्थान भावनात्मक रूप से सुरक्षित होना चाहिए और इसके लिए शिक्षक व बच्चे के बीच एक अनवरत और मज़बूत सम्बन्ध ज़रूरी है।

निजी विशेष शिक्षा और व्यावसायिक चिकित्सा सत्रों का खर्चा 400 से 600 रुपए प्रति सत्र के लगभग होता है, जिसकी अवधि 45 मिनट से लेकर एक घण्टे तक की होती है। कई अभिभावक यह खर्चा नहीं उठा सकते हैं। इससे माता-पिता की वित्तीय हालत पर गम्भीर असर पड़ता है, ख़ासकर जब उन्हें अपने भविष्य के लिए भी बचत करनी हो क्योंकि ये उपचार चार से पाँच साल तक चल सकते हैं। यदि स्कूल में विशेष शिक्षा के साथ-साथ व्यावसायिक चिकित्सा, भाषा और वाक चिकित्सा की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ तो न केवल माता-पिता का समय और पैसा बचेगा, बल्कि वे अपने विकलांग बच्चे को अन्य प्रकार के अनुभव भी दिला सकेंगे। उदाहरण के लिए उन्हें किसी कौशल की कक्षा में भर्ती करवाना जहाँ बच्चे की भीतरी ताक़त और रुचियाँ उभर सकती हैं, जैसे कि मिट्टी के बर्तन बनाना, कला और शिल्प, मल्टीमीडिया, नाटक, संगीत, खेल, खाना बनाना और बेकिंग। द्वितीय और तृतीय श्रेणी के शहरों में आवश्यक उपचार प्रदान करने वाले सम्भवतः एक या दो केन्द्र होते हैं और स्कूलों में एक भी विशेष शिक्षक नहीं होता है, जबकि दिल्ली, मुम्बई, पुणे जैसे मेट्रो शहरों में हर हफ़्ते एक नया केन्द्र खुल जाता है। ऐसे स्कूल भी हैं जिनके पास पेशेवरों की बहुत ही अच्छी टीम है, लेकिन इन स्कूलों की फीस इतनी अधिक है कि अधिकांश माता-पिता अपने बच्चों को वहाँ नहीं भेज पाते।

यहाँ पर यह बताना ज़रूरी है कि शिक्षा के इस पहलू पर भारतीय पुनर्वास परिषद (आरसीआई) के कोई दिशानिर्देश नहीं हैं। इस क्षेत्र में काम करने वाली विभिन्न एजेंसियों के नियमन हेतु दिशानिर्देश तैयार करने के लिए आरसीआई और सीबीएसई को साथ मिलकर कार्य करने की ज़रूरत है। हाल ही में इसने निजी संस्थानों में विकलांगता के विभिन्न पाठ्यक्रमों में डिप्लोमा और बीएड करने वाले विद्यार्थियों के लिए उपस्थिति अनिवार्य कर दी है - यह सही दिशा में उठाया गया एक क़दम है। स्कूलों को हर साल बच्चों की स्क्रीनिंग करनी चाहिए और अपेक्षित समर्थन प्रदान करना चाहिए, फिर चाहे वह अधिक और विविध शिक्षण-अधिगम सामग्री उपयोग करने जैसा सरल तरीक़ा ही क्यों न हो।

जिन बच्चों के ध्यान केन्द्रित करने की अवधि कम होती है वे व्यावसायिक चिकित्सक के परामर्श से डिज़ाइन किए गए खेलों और अभ्यासों के माध्यम से बेहद लाभान्वित होंगे। स्कूल और माता-पिता जितनी जल्दी ऐसे बच्चों की पहचान कर लें जिन्हें बाक़ी कक्षा के साथ अकादमिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक रूप से तालमेल बिठाने में परेशानी होती है, उतना ही बेहतर है। फिर वे विकासात्मक बाल रोग विशेषज्ञ, विशेष शिक्षक और व्यावसायिक चिकित्सक जैसे पेशेवरों की मदद से इनमें अन्तर्निहित मुद्दों का ठीक तरह से पता लगा सकते हैं। क्योंकि उसके बाद इन्हें प्राथमिक विद्यालय के स्तर से ही विशिष्ट रूप से निर्मित योजना के अनुसार शिक्षा प्रदान की जा सकती है। इससे स्कूलों को यथासम्भव बच्चों को मुख्यधारा की कक्षा में एकीकृत करने में मदद मिलेगी ताकि विद्यार्थी सामान्य शिक्षा के पाठ्यक्रम और सामग्री तक पहुँच सकें और अपने सहपाठियों के साथ सकारात्मक मित्रता विकसित कर सकें, जो बदले में, उन्हें सीखने के लिए एक समृद्ध और अधिक सुरक्षित आधार प्रदान करेगा।

सीखना कभी अलगाव में नहीं होता है और न ही कमज़ोर भावनात्मक सेहत के आधार पर। बच्चों को अपनी कमज़ोरियों पर जितना काम करने की आवश्यकता है, उतनी ही आवश्यकता उन्हें नियमित कक्षा के वातावरण की भी है जो उन्हें भविष्य के लिए तैयार कर सके और उन्हें स्मार्ट, सुरक्षित और आत्मविश्वासी वयस्कों में विकसित कर सके। यह किसी विशेष व्यवस्था की सुरक्षित दीवारों में नहीं हो सकता है। लिहाज़ा हमारे शिक्षकों को उनकी अलग-अलग डिग्रियों में विभिन्न प्रकार की विकलांगताओं के बारे में संवेदनशील

बनाए जाने की आवश्यकता है। इसके साथ ही कक्षा में सभी बच्चों की समान भागीदारी सुनिश्चित करने में उनकी मदद करने के लिए रणनीतियाँ भी विकसित करनी होंगी। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एनआईओएस) विकलांग विद्यार्थियों के लिए एक वरदान साबित हो रहा है क्योंकि यह बच्चों को किसी उपहास और अनुचित दबाव का सामना किए बिना अपने शैक्षिक लक्ष्यों को अपनी गति से पूरा करने देता है।

आज जब न्यूरोटिपिकल विद्यार्थियों के लिए भी खुली किताबों वाली परीक्षाओं पर विचार किया जा रहा है ताकि उन्हें उत्तरों को रटने से रोका जा सके, हमें विकलांग विद्यार्थियों के लिए भी इसी तरह की व्यवस्था बनानी चाहिए जिससे उन्हें एक सम्मानजनक व स्वतन्त्र जीवन जीने की तैयारी में मदद मिल सके, जो समावेशन के लिए ज़रूरी है। वर्तमान स्थिति ऐसी है जिसमें प्रतिबद्धता और निष्ठा की बहुत कमी है। उदाहरण के लिए, पहले तो स्कूल बच्चे की विकलांगता की पूरी जानकारी होने के बावजूद प्रत्येक विद्यार्थी के लिए पाठ्यक्रम संशोधित करने से इन्कार करते हैं और बाद में बच्चे को फेल कर देते हैं।

शिक्षक अपने कार्यों में मल्टीमीडिया की प्रस्तुतियों का उपयोग कर सकते हैं। तथापि उच्च दर्ज़े के स्कूल जो अब स्मार्ट बोर्ड का प्रयोग करते हैं, वे अपने शिक्षकों को इनका उपयोग करने की अनुमति नहीं देते हैं क्योंकि उन्हें समय पर पाठ्यक्रम पूरा करने की जल्दी होती है। विकलांग बच्चों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उचित शिक्षण-अधिगम सामग्री तैयार करने और उनका उपयोग करने में उच्च शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात एक और बाधा है।

मैंने क्या सीखा

जब मेरा बेटा एक 'सामान्य' स्कूल के अन्तिम सत्र में था तब मुझे उसका साथ देने का मौक़ा मिला। मेरे बेटे को स्वलीनता स्पेक्ट्रम विकार (एएसडी) है। यह स्पष्ट था कि कक्षा में बच्चों के सीखने, ध्यान देने और फोकस करने के अलग-अलग स्तर थे, जिनमें से लगभग दस बच्चों में विभिन्न अन्तर्निहित मुद्दों के कारण सीखने की अक्षमताएँ थीं। एक लड़की ऐसी थी जिसे कुछ भावनात्मक समस्याएँ थीं और वह अधिकांश कक्षाओं में अपना काम पूरा नहीं कर पाती थी। लेकिन गिनतारा (अबैकस) की कक्षा में वही लड़की काफ़ी उत्साही रहती थी और जब शिक्षक प्रश्नों को स्पष्ट रूप से और धैर्यपूर्वक दोहराते तो वह अधिकांश प्रश्नों के सही उत्तर दे देती थी। शिक्षक के धीरज ने ऐसा करने में उसकी मदद की।

जिन बच्चों में भाषा की पूरी क्षमता होती है लेकिन अधिगम सम्बन्धी अन्य अक्षमताएँ होती हैं, उनके माता-पिता शिक्षकों की चेतावनी को अनदेखा कर देते हैं और बच्चे का आकलन नहीं करवाते। ऐसे मामलों में स्कूल सहायता और मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है। स्कूल के विकासात्मक विशेषज्ञों और विशेष शिक्षकों की एक टीम माता-पिता को आमन्त्रित कर सकती है ताकि वे अपने बच्चे का उसकी कक्षा में और कक्षा के बाहर भी निरीक्षण करें और ख़ुद तय करें कि उनके बच्चे को वास्तव में कहाँ दिक़्क़त हो रही है।

कक्षा की ख़ाली दीवारें बच्चों को निरुत्साहित कर देती हैं, उन्हें बच्चों की कृतियों से भरा होना चाहिए। मेरे बेटे को वाहनों और कार्टून चरित्रों के चित्र बनाना तथा मोबाइल गेम्स के ग्राफिक्स को फिर से बनाना पसन्द है। केवल किसी परीक्षा में प्राप्त अंकों के लिए ताली बजाने से बाल मस्तिष्क में अकादमिक उत्कृष्टता के लिए एक मानदण्ड बनता है; अतः ऐसा करने की बजाय हमें इन ग़ैर-शैक्षिक उपलब्धियों की भी सराहना करनी चाहिए। आज की दुनिया में हमें लगातार याद दिलाया जाता है कि बोर्ड की परीक्षा में प्राप्त अंक बाद के जीवन में सफलता की गारंटी नहीं देते हैं। जो लोग अपने पूरे स्कूली जीवन में पढ़ाई में पिछड़े हुए थे, उन्होंने बाद में सफलतापूर्वक अद्वितीय उद्योग स्थापित किए हैं।

आज स्कूलों के पास अपने विद्यार्थियों को अधिगम का प्रेरक वातावरण प्रदान करने के लिए आधारभूत संरचना और संसाधन हैं। इनका रचनात्मक रूप से उपयोग करने के लिए एक छोटा प्रयास करना चाहिए। एक और विचार यह है कि दैनिक समय-सारिणी को इस तरह से नियोजित करना चाहिए कि बच्चों को नियमित अन्तराल पर गति विराम, शारीरिक व्यायाम और अन्य संवेदी विराम दिए जा सकें और उन्हें शैक्षिक अवधियों के दौरान पूरी सतर्कता और एकाग्रता के साथ अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में मदद मिल सके। उदाहरण के लिए दिल्ली के एक स्कूल में दिन-प्रतिदिन का कार्य शुरू करने से पहले शून्य काल में बच्चों से स्केटिंग करवाई जाती है।

मेरी सात वर्षीय बेटा अपने अधिगम की कठिनाइयों और संवेदी मुद्दों (जो कि स्वलीनता की कुछ सह-अस्वस्थताएँ हैं) के कारण स्कूल के शैक्षिक पाठ्यक्रम के साथ तालमेल नहीं रख पा रहा है, लेकिन उसके सहपाठी उसकी स्पेलिंग याद करने की क्षमता, तैराकी और पानी के अन्दर उसके कौशलों का लोहा मानते हैं। जब वे मुझसे मिले तो उन्होंने मुझसे कई सवाल पूछे : हेरम्ब ऐसा क्यों करता है? वैसा क्यों करता है? वह इन दिनों नियमित रूप से स्कूल क्यों नहीं आता (स्कूल ने उसे बिना शैक्षिक सहायक के आने की अनुमति नहीं दी थी)? किसी अच्छे शैक्षिक सहायक को ढूँढ़ना एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि उन्हें प्रशिक्षित करने के लिए अभी तक कोई संस्था नहीं है और स्कूलों के पास आन्तरिक शिक्षक अथवा सहायक स्टाफ को इस भूमिका में रखने के लिए न तो समय है और न ही प्रेरणा।

एक विकलांग बच्चे की माता के रूप में जब मैं अपने बच्चे को कोई कौशल चुनने में मदद करने की कोशिश करती हूँ तो कभी-कभी मुझे कठिन पलों और एकदम ठण्डी नज़रों का सामना करना पड़ता है; क्योंकि लोग न तो नए विचारों का उपयोग करना चाहते हैं और न ही अपने तरीक़ों को बदलना चाहते हैं। तब ऐसा महसूस होता है कि दुनिया की आलोचनात्मक नज़रों से दूर अपने बच्चे को अपनी बाँहों में समेटकर हम किसी निरापद और सुरक्षित जगह में जाकर छुप जाएँ। लेकिन अपनी कमज़ोरी को ख़ुद पर हावी न होने दें क्योंकि ऐसा करके आप न केवल अपने बच्चे को बल्कि कई और बच्चों को भी हानि पहुँचाएँगे। मुझे जितनी भी कठोर टिप्पणियाँ सुनने के लिए मिलीं, कठिन परिस्थितियों में मुझे उतना ही अप्रत्याशित उत्साह मिला तथा मैंने अपने बच्चे को उसकी क्षमता तक पहुँचाने में उसकी मदद करने के लिए वह सब कुछ किया, जो मैं कर सकती थी।

विकलांग बच्चों को पढ़ाने के रोज़मर्रा के संघर्ष में हम अकसर यह महत्वपूर्ण बात भूल जाते हैं कि विकलांग बच्चा सबसे पहले तो एक बच्चा है। मुझे अभी भी याद है कि जब मुझे अपने बेटे की स्वलीनता के बारे में पहली बार बताया गया तो उसके बाद छह महीने तक मैं उसकी तस्वीरें लेना पूरी तरह से भूल गई थी, जबकि पहले मैं, स्मार्टफ़ोन की बदौलत, उसकी हर मुस्कान की, उसकी हर गतिविधि की फ़ोटो क्लिक करती थी। जब आप बच्चे के उपचार के लिए इधर से उधर दौड़भाग करें तो बच्चे को खुली हवा और खुले स्थानों में पर्याप्त समय बिताने का अवसर देना न भूलें। इनसे मेरे बेटे को काफ़ी मदद मिली, उसके कई संवेदी और नींद से जुड़े मुद्दों का समाधान मिला। साथ ही सीखने के मज़ेदार मौक़े भी सामने आए। व्यक्तिगत रूप से मुझे यह विशेष नाम या टैग समझ नहीं आता : विशेष आवश्यकता वाले बच्चे, विशेष स्कूल, विशेष सेटअप इत्यादि - तो क्या आगे चलकर विशेष कॉलेज, अस्पताल, बैंक, मॉल वगैरह भी होंगे?

हालाँकि मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) के हस्तक्षेप और दिल्ली सरकार के विकलांग बच्चों के लिए ऑनलाइन प्रवेश अभियान (जिसके तहत स्कूलों को अपने आसपास के विकलांग बच्चों को प्रवेश देने के लिए मजबूर किया गया है) से अभिभावकों को अपने बच्चे को स्कूल में सीट दिलाने में मदद मिली है, लेकिन यह बच्चे के अधिकारों के लिए स्कूल के अधिकारियों के साथ निरन्तर चलने वाली लड़ाई की एक लम्बी व संघर्षपूर्ण यात्रा की शुरुआत भर है। अगर हम आज इस लड़ाई से कतराते हैं तो हमें भविष्य में एक समावेशी समाज का सपना देखना बन्द कर देना चाहिए।

References

Sakhuja, S. (2004). Education for All and Learning Disabilities in India. Society for the Study of Peace and Conflict.

https://www.rehabcouncil.nic.in, Learning Disabilities, Rehabilitation Council of India.

अनुपमा राय ने बायोटेक्नोलोजी में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की है । उन्होंने TERI, CII और IDRC कनाडा जैसी संस्थाओं के साथ काम किया है । अब वे एक सुन्दर स्वलीन लड़के की माँ हैं, उसके अधिकारों के पक्ष में पैरवी कर रही हैं और अन्य लोगों को जागरूक कर रही हैं । उनसे anupma04@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है । **अनुवाद :** नलिनी रावल